

पद १६९

(राग: ललित - ताल: ध्रुपद)

तू है तू परशिव परब्रह्म निर्विकार॥ध्रु॥ सत्यरूप सत्य बीज
एकाकी सकल विश्वाधार। अभोग शिव जीव विद्या अविद्या
पंचभूत परम पुरुष निगम अगोचर मानिक नाम चिदानंद शाश्वत
अखिलाधार॥१॥